Cultural diversity and problems in translation special reference to hindi novels translated from malayalam and vice versa

सांस्कृतिक वैविध्यता से उत्पन्न अनुवाद की समस्याएं

(हिंदी से मलयालम और मलयालम से हिंदी में अनूदित उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में)

अनुवाद दो भिन्न भाषा भाषियों के बीच विचारों के आदान प्रदान का एक सशक्त माध्यम है I इसकी सहायता से दो भिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में प्रयुक्त होनेवाली भाषाओँ के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है I अनुवाद मानव की मूलभूत एकता , व्यक्ति चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है I विश्व संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया में विचारों के आदान – प्रदान का योगदान रहा है , और यह अनुवाद के माध्यम से संभव हो सका है I अनुवाद यांत्रिक प्रक्रिया नहीं अपितु मौलिकता से स्पर्श करता हुआ कृतित्व है I उसके एक छोर पर मूल लेखक होता है तो दूसरी छोर पर अनुवादक I इन दोनों के बीच है अनुवाद की प्रक्रिया I इस प्रक्रिया के दौरान विचारों के साथ संस्कृतियों का भी आदान – प्रदान होता है I दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों का मिलन हुआ है वहाँ सामासिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है I

भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग में अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है I कोई भी एक भारतीय साहित्य एक दुसरे भारतीय साहित्य से कहीं न कहीं जुडा हुआ है I भारतीय साहित्य की भाषिक विविधता को दूर करने में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है I अनुवाद सांस्कृतिक आदान - प्रदान की प्रक्रिया को संपन्न करती है I भारतीय साहित्य के अंतर भाषिक अनुवाद से देश में सांस्कृतिक आदान – प्रदान तथा सांस्कृतिक एकता के प्रचार को प्रभावी बनाया जा सकता है I भारतीय साहित्य में विभिन्न प्रान्तों की सामाजिकता और संस्कृति बोध के साथ लोक संस्कृति भी व्यक्त होती है I इसलिए भारतीय भाषाओँ में रचित साहित्य के अंतर भाषिक रूपांतरण के लिए अनुवाद की प्रक्रिया एक सशक्त उपाय है I

हिन्दी और मलयालम भारत की दो प्रमुख भाषायें हैं , इसलिए इन दोनों भाषाओँ के बीच आज साहित्यिक आदान – प्रदान हो रहे हैं I हिन्दी और मलयालम भारत की सामासिक संस्कृति की दो धाराओं की प्रतिनिधियाँ हैं I इसलिए इन भाषाओँ के अनुवाद के माध्यम से भारत की दो भाषाई उपसंस्कृतियों के बीच सेतुबंधन हो पायेगा I उत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुदूर दक्षिण भारत के मलयालम भाषा की सांस्कृतिक गरिमा से मिलानेवाली अनुवाद की प्रक्रिया काफि जटिल भी है I केरल और उत्तर भारतीय सांस्कृतिक वैविध्यता अनुवाद के सामने बहुत सारी समस्यायें खड़ी कर देती हैं I मेरे इस शोध कार्य में उन समस्याओं को परखने की कोशिश हुई हैं I और इस शोध

कार्य का शीर्षक है " सांस्कृतिक वैविध्यता से उत्पन्न अनुवाद की समस्याएं " (मलयालम से हिंदी और हिंदी से मलयालम में अनूदित उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में) I

मलयालम से हिन्दी में अनूदित उपन्यास और हिन्दी से मलयालम में अनूदित उपन्यास हमेशा स्थानीय सविशेषताओं से संपुट होती हैं I किसी प्रदेश विशेष , वहाँ के समुदाय विशेष , भौगोलिक सविशेषता , ऋतू , रीति – रिवाज़ , समुदाय विशेष की बोलियाँ सब अनुवाद के सामने समस्या हैं I रचनाओं में कुछ सन्दर्भ अवश्य ऐसे रहेंगे , जहाँ अनूदित कृति विशेष सामजिक , सांस्कृतिक, ऐतिहासिक , भौगोलिक विशेषताओं से , सांस्कृतिक अनुष्ठानों से संबंध रखते हैं I त्यौहार , खाद्य पदार्थ वस्त्र धारण संबंधी विवरण , पेड़ – पौधों के विवरण मौसम की विशेषताएँ सभी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं I इन सन्दर्भों से जुड़े सांस्कृतिक परिवेश को आत्मसात करना और कराना अनुवाद के सामने कठिन समस्या है I भाषाओँ में मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया जाता हैं I कलात्मक और असरदार अभिव्यक्ति के लिए सादृश्य का भी प्रयोग किया जाता है I ये संदर्भ इन किसी भाषा की लोक संस्कृतिक पहलुओं को उजागर करते हैं I लेकिन अनुवाद में इन सन्दर्भों की सांस्कृतिक सविशेषता एवं महत्त्व को उजागर करने वाले शब्दों , मुहावरों तथा लोकोक्तियों को ढूंढना काफि मुश्किल है I यह कठिनाई भी अनुवाद के सामने समस्या उत्पन्न कर देती है I रिश्तें – नातों की शब्दावली में भिन्नता , विभिन्न विषयों

तथा कार्य क्षेत्रों की प्रयुक्ति आदि भी भाषाई वैविध्यता से सम्बन्ध रखती हैं I यह भी अनूदित कृति की सहजता को नष्ट करनेवाली समस्या है I

इन समस्याओं से ऊपर उठकर हिन्दी और मलयालम भाषाओँ के उपन्यासों के बीच अनुवाद की प्रक्रिया हो रही हैं I क्योंकि अनुवाद की प्रक्रिया से ही इन भाषाओँ में वर्णित विषय वस्तु और उसके भाव सौन्दर्य का आस्वादन किया जा सकता है , इन भाषाई प्रदेश के सामाजिक संस्कृति एवं लोकसंस्कृति के ज्ञान को हासिल कर पायेंगे I अनुवाद के द्वारा ही भारतीय साहित्य में निहित मूलभूत एकता के तत्वों से अवगत हो पायेंगे I वर्त्तमान सन्दर्भ में प्रचलित प्रांतीय विभेदों को दूर कर पायेंगें I